International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

हिन्दी भाषा और आजादी की लड़ाईः पूर्वेत्तर भारत के संदर्भ में

डॉ साइफुल इस्लाम
सहः प्रध्यापक, जुरीया महाविद्यालय, नगाँव

संक्षिप्त सार : हिन्दी एक बैसी मिट्ठाच भाषा है- जो विश्व के हर व्यक्ति बोलना और सिखना चाहते है। भारत के हर एक राज्य की भाषा अलग होते हुए भी हिन्दी भाषा को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है, जिसके वजह है - हिन्दी ही एक वैसी भाषा है, जो पुरे हिन्दुस्तान को एक साथ जोड़ सकते है। असम में सबसे पहले जोरहाट के पुलिच अधीक्षक श्री यज्ञराम खारघरीया फुकन जी ने असम के उन्नति के लिए लोगों को बंगाल भाषा के जगह हिन्दी भाषा सिखना अधिक उपयोगी समझा और सन - १९३२ में ...समाचार दर्पन.. में अपना रचना प्रकाशित किया। महात्मा गान्धीजी भी भारत के आजादी के लिए पूरे भारत में हिन्दी भाषा फैलाने चाहा और हिन्दी भाषा को प्रचार-प्रसार के लिए राघव दास को असम में भेजा था और वाद में खुद भी असम दौरा किया था। गांन्धी जी यह जानते थे कि देश-प्रेम भाव हिन्दुस्तान के कोणे-कोणे तक पहचांने के लिए हिन्दी भाषा ही एक मात्र जड़ीया है। जिसके फलस्वरुप गान्धीजी असम आगमन के वाद भारत की आजादी की लड़ाई में पूर्वोत्तर लोगों का सहयोग और भी बड़ गये थे। भारत के आजादी की लड़ाई में पूर्वोत्तर भारत की लोग तथा हिन्दी भाषा का अवदान उल्लेखनीय है।

बीजशब्द – हिन्दुस्तान, हिन्दीभाषा, आजादी की लड़ाई, पूर्वोत्तर भारत ।

प्रस्तावना -

हिन्दुस्तान के आजादी के लडाई में पूर्वोत्तर का भी उल्लेखनीय अवदान हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध में आन्दोलन में भारतीय जनता को शामिल होने के लिए घर घर आवाज पहुंचाना था। जिसके फल स्वरूप हिन्दी भाषा को गांधीजी तथा वाकी संग्रामी नेताओं ने आग्रह किया था कि हिन्दी भाषा कों समस्त भारत में फैलाया जाए। हिन्दी भाषा ही एक कंडेसी भाषा है जो मध्य भारत में पहले से ही प्रचारित है और इस भाषा से ही आसानी से पुरे भारत के लोगें के हृदय में देश प्रेम जागा सकेंगे। जिसके फल स्वरुप हिन्दी भाषा को पुरे भारत के साथ साथ पूर्वोत्तर में भी गाधींजी के निर्देश में पुरुषत्तोमदास, राघव जी टेडन और राघवदास ने प्रचार-प्रसार के लिए आए थें असम के यज्ञराम खारघरीया फुकन, अम्बिका प्रसाद, धनेश्वर शर्मा, नवीन चन्द्र कलिता, रजनी कान्त चक्रवंती आदि उल्लेखनीय व्यक्तियों ने असमीया लोगे के थीच में पुरे भारत के लोगों के साथ अपना योगदान वेखुवी सं निभाया और इसका जड़िया एकमात्र हिन्दी भाषा ही था। इसके लिए असमीया लोगों को दो तरह की लाभ हुआ पहले असमीया लोगों को हिन्दी भाषा सीखे और भारत के अन्य राज्य के लोगों से भाव का आदान-प्रदान आसानी से हो गये।

विश्लेषण -

बालगंगाधर तिलक का कहना था कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिस में प्राप्त करके रहूंगा' का देने वाले नेता का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ठ स्थान। भाषा के बारे में तिलक जी का कहना है हिन्दी ही एक मात्र भाषा है, जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिन्दी का समर्थन करते

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
IJARST
ISSN: 2457-0362

हुए नागरी प्रचारिणी पत्रिका में लिखा "यह आन्दोलन उत्तर भारत में केवल एक मात्र सामान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है। यह तो उस आन्दोलन का एक अंग है जिसे में राष्ट्रीय आन्दोलन न कहोगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है। क्योंकि सब के लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है। अतयव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों एक दूसरे के निकट लाना चाहते तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नही है"। आपने हिन्दी केसरी पत्रिका प्रकाश कर हिन्दी भाषा को लोगोंतक पहुँचाने के लिए कोशिश की। महात्मा गान्धी जी के निर्देशनुसार राघव दास असम दौड़ा किया था। राघव जी ने पूर्वोत्तर में काफी दिन रहकर हिन्दी प्रचार के लिए बहुत काम की। महात्मा गांधी जी भी हिन्दी प्रचार के लिए असम आये थे। जिसके फल स्वरुप असमीया लोगों के मन में हिन्दी भाषा के प्रति श्रद्धा और भक्ति बढ़े और इसके जड़िये लोगों के दिल और दिमाग में देश के प्रति प्रेम भाव जागृत होने लगे और भारत की स्वतंन्त्र संग्राम पुरे जोड़दार होन लगे।

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी -

भारत में अनेक राज्य हैं और सभी राज्यों की अपनी-अपनी अलग भाषआ है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषीय राष्ट्र हैं लेकिन अन्य कई देशों की तरह भारत की भी अपनी एक राष्ट्रभाषा है जिसका नाम है हिन्दी। भारतवर्ष की प्रमुख विशेषता है- "विविधता में एकता। हमारे देश में लगभग 170 भाषाएँ और तकरीबन 500 बोलियाँ हैं। भारत की अनेक भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाया है जिसे अपने क्षेत्र से बाहर विकसित होने का अवसर मिला है। वर्तमान में हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। उत्तर-पूर्व की भाषाओं का अन्य भारतीय भाषाओं के साथ गहरा संबंध है। आमतौर पर पूर्वोतर राज्यों की गिनती गैर-हिन्दी प्रदेशों में की जाती है लेकिन पूर्वोतर के लोग जब भी अपने किसी पड़ोसी राज्य के लोगों से मिलते हैं, तो उनकी सर्पक भाषा हिन्दी होती है। क्योंकि हिन्दी विचारों के आदान-प्रदान का सबसे आसान माध्यम है। सबसे पहले जोरहाट के पुलिस सुपरीटेंडेंट श्री यज्ञराम खारघरीया फुकन ने यह महसूस किया कि असम की उन्नति के लिए असम वासियों को वगला की चगह हिन्दी सीखना अधिक उपयोगी होगा। हिन्दी शिक्षण को ध्यान में रखकर उन्होंने एक उपयुक्त ग्रंथ रचने का संकल्प किया था- इस योजना को उन्होने सन 1832 के 79 भट्टे वाले समाचार दर्पण में प्रकाशित किया था। इसका नाम रखा गया था। हिन्दी व्याकरण और अभिधान लेकिन दुर्भाग्य वश यक्षराम खारघरीया फुकन जी की आकस्मिक मृत्यु के कारण यह ग्रंथ अधूरा ही रह गया। सन 1885 के बाद जब स्वतंत्तता आन्दोलन ने जोर पकड़ लिया तव भी असम में हिन्दी का संस्थागत प्रयास नहीं था। सन 1926 में पहली वार विद्यालयों में हिन्दी को शिक्षण विषय के रुप रुप में जगह मिला। इसका क्षेय शिवसागर के पॉलिटेकनिक इंस्टीट्यूट के प्रतिष्ठाता भुवन चन्द्र गर्ग को जाता है।

पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी का वास्तविक रूप आया जब 1934 में अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना के लिए महात्मा गाँधी असम आये थे। उन्होंने हर जगह अपने संबोधन में असम के लोगों पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी का वास्तविक रूप आया जब 1934 में अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना के लिए महात्मा गाँधी असम आये थे। उन्होंने हर जगह अपने संबोधन overline 4 असम के लोगों को हिन्दी सिखने की बात कही थी। गाँधी जी के बातों से प्रभावित होकर श्री पीतांवर देव गोस्वामी ने बताया की यहाँ हिन्दी सिखाने वालों की कमी हैं, यदि इसकी व्यवस्था हो जाए तो, हम हिन्दी शिक्षण- प्रशिक्षण के कारीक्रम को शुरु कर सकते है। गोस्वामी जी के बातों से संतुष्ट होकर गाँधी जी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

यावा राघवदास को हिन्दी प्रचारक के रुप में नियुक्त करके असम भेज दिए। राघवदास असम आए और उन्होंने कुछ हिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी शिक्षण के लिए नियुक्त किया। जिसमें जोरहाट से अम्बिका प्रसाद धनेश्वर शर्मा और गोलाघाट से बैकुंठ नाथ सिंह मुख्य थे। ये सभी प्रशिक्षित अध्यापक तो नहीं थे लेकिन इनमें मुख्य बात यह थी कि ये सभी असमीया भाषा जानते थे और व्याकरण अनुवाद पद्धति । उनका माध्यम था। इसी बीच कुछ असमीया युवक-युवतियाँ काशी विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय संस्थान में अध्ययन के लिए गए। उनमे नवीनचंन्द्र कलिता, खर्गश्वर मजुमदार का नाम उल्लेखनीय है। बाया राघवदास के आश्रम में रजनीकान्त चक्रवर्ती और हेमकांत भट्टचार्य जी हिन्दी सीख रहे थे। याद में नवीनचंन्द्र जी भी आ गए। फिर इन तीनों को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा दवारा संचालित हिन्दी अध्यपन मंदिर में प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया। असल में ये तीनों ही असम में हिन्दी शिक्षण के पुरोधा थे। प्रशिक्षण समाप्त कर, श्री नवीन चंन्द्र कलिता जी को गुवाहाटी, श्री रजनी कान्त चक्रवर्ती जी को-शिवसागर में और स्व. हेमकांत भट्टाचार्य जी को नगाँव के प्रचारक के रुप में नियुक्त किया गया। इन महानुभावों के उत्साह और प्ररणा के प्रताप का ही फल है कि आज पूर्वोत्तर भारत के विद्यालयों में हिन्दी भाषा की नींव पड़ी। यहाँ समिति आगे चलकर असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति बनी। जो आज भारत के श्रेष्ठ हिन्दी स्वैच्छिक संस्थानों में से एक है।

असम, नागालेन्ड, मणिपुर, मिजोराम, अरुणाचल प्रदेश आदि क्षेत्र में राष्ट्रभाषा प्रचार का प्रमुख उद्देश्य हिन्दी भाषा को आम लोगों तक पहुँचाना था। कहते है कि जिन भाषाओं की लिपि देवनागरी होती हैं, वह भाषा हिन्दी नहीं होते हुए भी देवनागरी लिपि के माध्यम से 'हिन्दी' के प्रचार-प्रसार में सहायक होती है। साहित्य विशिष्ट रूप से राजनीति और संस्कृति के क्षेत्र में सामान्य रूप से राष्ट्र का दर्पण होता है। भारत के मामले में, समृद्ध भाषा की विविधताएं और साहित्यकारों का चमत्कार राष्ट्रीय जागरण और स्वतंत्रता के अधिकार के विचारों को फैलाने में सहायक था। इसके अलावा, स्वतंत्रता आंदोलन ने औपनिवेशिक युग के दौरान साहित्य की प्रवृत्तियों को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। इकवाल और रवीन्द्रनाथ टैगोर की कृतियाँ, भगत सिंह, प्रेमचंद और बंकिमचन्द्र के उपन्यासों ने स्वतंत्रता संग्राम के पैमाने को बहुत प्रभावित किया और जनता को उनके 'जन्म अधिकार' के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया, जैसा कि तिलक ने प्रस्तावित किया था। यहां तक कि महात्मा गांधी ने भी टैगोर द्वारा लिखित प्रसिद्ध एकला चलो रे से प्रभावित होकर स्वतंत्रता की अपनी खोज को फिर से जीवत किया। असम में, ऐसे कई साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से हिन्दुस्तान की आजादी लड़ाई लड़े।

आजादी लड़ाई के संबंध में असम कभी भी अछूता क्षेत्र नहीं था। क्षेत्रीय नेताओं के सक्षम राष्ट्रीय नेताओं के अधीन असमिया अपनी मातृभूमि को उपनिवेशावाद से मुक्त करने के लिए प्रतिवद्ध चे। यह एक तथ्य है कि भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन के पक्ष में सभी जगह लोकप्रिय आसन था। यहुत से लोग अपने नाम यादगार न्यायिक और कई और भूमि पर उतरते हैं। अंडमान निक्रर के कलापंत या तहखाने के जेल में भेजे गए थे। रघुनाथ चंदूरी हम इस आंदोलन के दौरान लेखन के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए सलाखों को लगाते हैं। असम में चाय की खेती के अग्रदूत मनीराम दीवान जैसे नायको नायकों को ब्रिटिश सरकार ने पियोली फुकन, कुशल कोवर सहित अन्य लोगों के साथ विद्रोही उत्तेजना के आधार पर फांसी दी थी। इन वहादुर दिलों का उल्लेख के साहित्य में, यहां तक कि वोली में भी मिलता है। स्वतंत्रता के बाद, कई साहित्यकारों ने पूर्वोत्तर के विमोचन को

ईदोम संघर्ष में पुस्तकों, नोवा, मेनर्स, लेखों के रूप में संकलित किया है। भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलन में पूर्वोत्तर की भूमिका और असमीया लिटरकोर्स की कटौती के संबंध में अंग्रेजी या हिंदी में बहुत कम साहित्य उपलब्ध है। इसलिए आजादी की लड़ाई में पूर्वोत्तर की भागीदारी के वारें में मुख्य भूमिका में जानकारी की कमी है और उन कार्यों का अनुवाद करने के लिए आगे का रास्ता और विभिन्न भारतीय भाषाओं में देखे जाते है।

निष्कर्ष -

हिन्दी भाषा का व्यापक रूप हिन्दुस्तान की आजादी लड़ाई के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाया है। खासतौर पर अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा प्रचार द्वारा ही लोगों को एकत्र किया और पूर्वोत्तर भारत भी अहिन्दी भाषी होने के नाते गान्धीजी के नीर्देश से हिन्दी भाषा की प्रचार- प्रसार द्वारा ही आजादी लड़ाई आसान बना दिया।

सन्दर्भ ग्रथ

१. भूर्जा. एस. के भारतर स्वाधीनता आन्दोलनत असम (द्वितीय संस्करण) प्रकाशक लयाचं युक स्टल ।

२. बेगम. एस. असम बुरंजी एस.एल.वि. पाव्लिकेशन, गुवाहाटी।

३. वरदले एन. (इडिट २०२०) स्वाधीनता संग्रामत असमीया गीत आरु कविता, प्रकाशक - साहित्य एकाडेमी गुवाहाटी ।

४. काकति आर चि. (इडिट २००८) स्वाधीनता आन्दोलन आरु असम (प्रथम संस्करण) प्रकाशक - प्रकाशण परिषद, गुवाहाटी।

५. कलिता के. (२०१९) भारतर स्वाधीनता आन्दोलनत असमर सेनानी (प्रथम संस्करण) चन्द्र।